सुभाषित

करत करत अभ्यास के जड़मति होंहिं सुजान।
रसरी आवत जात ते सिलपर परहिं निशान।।

❑ *वृंद सतसई*

मध्यस्थतासे संघर्ष विराम

अमेरिका और फ्रांसकी मध्यस्थतासे इसरायल और हिजबुल्लाके बीच लगभग १४ महीनोंसे जारी युद्धका थमना अच्छी उपलब्धि है, जो स्वागतयोग्य होनेके साथ विश्वके लिए अच्छा सन्देश भी है। मध्य पूर्वमें इसरायल और लेबनानके हिजबुल्ला आतंकवादियोंके बीच हुए समझौतेके तहत बुधवारको युद्धविराम शुरू हो गया। अमेरिका और फ्रांस इसके लिए बधाईके पात्र हैं। अमेरिकाकी मध्यस्थतासे मंगलवारको देर रात संघर्ष विरामकी घोषणा की गयी और उसपर अमल प्रारम्भ हो गया। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेनने घोषणा की कि इसरायल और लेबनानके हिजबुल्लाने ६० दिनोंके लिए शान्ति समझौतेको स्वीकार कर लिया है। दोनों पक्षोंके बीच शत्रुताकी समाप्तिके उद्देश्यसे ही यह समझौता तैयार किया गया। यह संघर्ष विरामका एक पड़ाव है जिससे दोनों पक्षोंको राहत मिलेगी। समझौतेके अनुसार हिजबुल्लाको दक्षिणी लेबनानमें हथियार डालने होंगे और इसरायली सैनिकोंको सीमापर इसरायलके क्षेत्रमें लौटना होगा। लेबनानके दक्षिणी हिस्सोंमें लेबनानके सैनिकोंके अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र शान्तिरक्षक भी तैनात किये जायंगे। अमेरिकाके नेतृत्ववाली एक समिति संघर्ष विरामके समझौतेके अनुपालनकी निगरानी करेगी। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेनका यह कथन विशेष रूपसे महत्वपूर्ण माना जायगा युद्धविराम शान्तिकी दिशामें एक ठोस कदम है। यदि हिजबुल्ला युद्धविरामकी शर्तोंको तोड़ता है तो इसरायलको लेबनानमें सैन्य अभियान चलानेका अधिकार होगा। इसरायलके प्रधान मंत्री बेंजामिन नेतन्याहूने समझौतेका स्वागत करते हुए अमेरिकी योगदानकी प्रशंसा भी की है। वस्तुत: ऐसे युद्धोंसे उपलब्धि कुछ नहीं होती है, बल्कि बर्बादी ही होती है। बड़ी संख्यामें सैनिकोंके अतिरिक्त निर्दोष लोग भी मारे जाते हैं। इसलिए युद्ध कोई विकल्प नहीं है। ६० दिनोंके युद्धविराम वैसे तो अस्थायी है लेकिन इसे और लम्बा जीवन देनेकी आवश्यकता है। यह युद्धविराम रूस और यूक्रेनके लिए भी एक बड़ा सन्देश है। इन देशोंको शान्तिकी दिशामें सार्थक कदम उठानेकी आवश्यकता है। रूस और यूक्रेन दोनों देशोंको इसपर गम्भीरतासे विचार करनेकी जरूरत है जिससे कि आगेकी बर्बादीको रोका जा सके। लेकिन जो हालात बन गये हैं वह दोनों देशोंके अतिरिक्त अन्य देशोंके लिए भी चिन्ताजनक है। भारतका कहना पूरी तरहसे सही है कि यह समय युद्धका नहीं है। शान्तिसे ही सुख और समृद्धि है तथा युद्धसे सिर्फ बर्बादी ही होती है।

दवाओंकी गुणवत्तापर सवाल

बिना किसी निरीक्षण, परीक्षणके ही दवाओंका बाजारमें आना और बेखौफ इनकी बिक्रीका जारी रहना गम्भीर चिन्ताकी बात है, क्योंकि ये जन-स्वास्थ्य और जीवनसे सम्बद्ध है। इसके लिए दवा कम्पनियोंसे ज्यादा चिकित्सक दोषी हैं, जो भ्रष्टाचारमें संलिप्त हैं। हैरान करनेवाली बात यह है कि इन दवाओंको सरकारी अस्पतालोंके डाक्टर भी लिख रहे हैं और अस्पतालोंसे मरीजोंको नि:शुल्क आपूर्ति भी की जा रही है। केन्द्रीय औषधि मानक नियंत्रण संघटन (सीडीएससीओ) की जांचमें बुधवारको देशभरकी दवा कम्पनियोंमें निर्मित दवाओंके ५६ सैम्पलकी गुणवत्ता खराब पायी गयी। इसमें शुगर, हृदय, कैंसर, उच्च रक्तचाप, निमोनिया और संक्रमण जैसी घातक बीमारियोंके इलाजमें प्रयोग होनेवाली दवाएं शामिल हैं। इनमें इजेक्शन, सीरिंज और काटन भी शामिल है। सर्वाधिक २३ दवाओंका उत्पादन हिमाचल प्रदेशमें हुआ है। इसके अतिरिक्त हरियाणा, पंजाब, उत्तराखण्ड, मध्यप्रदेश, तेलंगाना, गुजरात, सिक्किम, बंगाल, आंध्रप्रदेश और ओडिशाके उद्योगोंमें बनी दवाएं भी मानकोंपर खरी नहीं उतरीं। इसको लेकर सीडीएससीओने बुधवारको अक्तूबरका ड्रग अलर्ट जारी किया है और सभी राज्योंके दवा नियंत्रकोंको सूची जारी कर काररवाईका निर्देश दिये हैं। दवा कम्पनियोंकी निरंकुशता और मनमानी इस बातसे समझा जा सकता है कि दवाएं जो मानकके अनुरूप नहीं पायी गयी हैं उनमें कुछ ऐसी दवाएं भी हैं जो मिस ब्राण्डेड हैं और उनपर दर्शायी गयी जानकारी सही नहीं है। यह अक्षम्य अपराध है। इसके विरुद्ध कड़ीसे कड़ी काररवाई की जानी चाहिए जो दूसरोंके लिए सबक बने। सीडीएससीओ हर महीने देशके विभिन्न हिस्सोंसे औचक निरीक्षक कर ३० से ४० हजार दवाओंको एकत्र कर जांच करता है और मानकके विपरीत दवाओंके लिए अलर्ट भी जारी करता है। इसके बाद भी इस तरहका खेल जारी रहना कई सवाल खड़ा करता है। मानव जीवनसे खेलवाड़ करनेवाली ऐसी कम्पनियोंके विरुद्ध सख्त कदम उठानेकी जरूरत है तभी इसपर अंकुश लगाया जा सकता है।

लोक संवाद

अनगिनत फायदोंसे भरपूर खजूर

महोदय,-सर्दियोंमें शकरकंदी एवं सिंघाड़ेकी तरह खजूरकी डिमांड भी बढ़ जाती है। इसका सेवन कुछ लोग यूं ही करते हैं तो कुछ खजूरका शेक बनाकर पीते हैं। इसमें आयरन, मिनरल्ज, कैल्शियम, अमीनो एसिड, फास्फोरस और विटामिंस जैसे पोषक तत्वोंकी प्रचुर मात्रा होती है। खजूरमें ग्लूकोज और फ्रक्टोजकी भरपूर मात्रा होती है, जिससे डायबिटीज कंट्रोलमें रहती है और इम्यून पावर बूस्ट होती है। एक खजूरसे २३ कैलोरी मिलती है, जिससे कोलेस्ट्रॉल लेवल ठीक रहता है। इसके अलावा सैल डैमेज, कैंसर और दिलसे जुड़ी समस्याओंसे बचावके लिए खजूरका सेवन काफी फायदेमंद है। खजूरमें फाइबर, आयरन, कैल्शियम, विटामिन और मैगनीशियम भरपूर मात्रामें होते हैं, जो सर्दियोंमें शरीरमें गरमाहट पैदा करनेके साथ एनर्जी भी प्रदान करते हैं। खजूरमें प्रोटीन होता है, जिससे डाइजेशन सिस्टम बेहतर बना रहता है। यदि आप भी अकसर एसिडिटीकी समस्यासे परेशान रहते हैं तो रोजाना सुबह उठकर खाली पेट खजूर खायें। खजूरमें मैगनीज, कॉपर और मैगनीशियम होता है, जिसकी मात्रा शरीरमें जानेसे हड्डियां मजबूत होती है। खजूर खानेवाले लोगोंको बढ़ापेमें स्वास्थ्य संबंधी समस्याओंका सामना भी कम करना पड़ता है। नर्व्स सिस्टमके फंक्शंजको बेहतर बनानेके लिए भी खजूरका सेवन फायदेमंद है। **-प्रिया शेख, वाया ईमेल।**

पौष्टिक मशरूम

महोदय,-मशरूम पौष्टिक,स्वास्थ्यवर्द्धक एवं औषधीय गुणोंसे भरपूर सुपाच्य खाद्य पदार्थ है। मशरूममें उत्तम स्वास्थ्यके लिए सभी प्रमुख खनिज लवण जैसे पोटाशियम, फास्फोरस, सल्फर, कैलिशयम, लोहा, तांबा, आयोडीन और जिंक आदि प्रचुर मात्रामें पाये जाते हैं। यह खनिज अस्थियों, मांसपेशियों, नाड़ी संस्थानकी कोशाओं तथा शरीरकी क्रियाओंमें सक्रिय योगदान करते हैं। मशरूममें दूसरी सब्जियोंके मुकाबले प्रोटीन, विटामिन-ई और सिलेनिमय अधिक मात्रामें पाया जाता है। यह त्वचा एवं बालोंको स्वस्थ रखनेके साथ दिलकी बीमारियोंसे रक्षा करता है। यह इम्यून सिस्टमको मजबूत बनाता है। सामान्य तौरपर डायबिटीजके रोगियोंके लिए भोजनमें बहुत अधिक सावधानी बरतनेकी सलाह दी जाती है, किन्तु यदि रोगीको मशरूम पसन्द है तो इसका सेवन उसके स्वास्थ्यके लिए फायदेमंद होगा। विशेषज्ञोंका कहना है कि डायबिटीजके रोगमें मशरूमके सेवनसे रक्तमें पाया जानेवाली शर्कराको कंट्रोल करनेमें मदद मिलती है। यह वजन करनेमें भी मददगार है। **-रत्ना गोसाईं, वाया ईमेल।**

अमेरिकी षडयंत्रसे अशांत विश्व

इस समय पूरा विश्व असंतुलित, अस्थिर तथा असुरक्षित है। दो धाराओंमें चल रहे दो युद्ध धीरे-धीरे विश्वके लिए कठिनाइयोंका कारण बन रहे हैं। रूस और यूक्रेनके युद्धको आरंभ हुए एक हजार दिन व्यतीत हो चुके हैं। दूसरी ओर इसरायल और फिलीस्तीन, ईरान इत्यादि मुस्लिम देशोंके मध्य भी डेढ़-दो वर्षोंसे युद्ध चल रहा है।

❑ **विकेश कुमार बडोला**

वर्तमानमें रूस और यूक्रेनका युद्ध तीव्र हो चुका है। अमेरिकामें डेमोक्रेट्स शासनके पतनके बाद उपरोक्त युद्धोंकी युद्धक गतिविधियां अनियंत्रित हो चुकी हैं। आम चुनाव जीतनेपर रिपब्लिकन ट्रम्पने दुनियाकी दो धुरियोंपर चल रहे युद्धोंको बंद करानेका सार्वजनिक संकल्प क्या उठाया कि सत्ताच्युत डेमोक्रेट्स तथा इनके संरक्षण-नियंत्रण वाली आयुध निर्माणियोंके स्वामियोंमें अपने निर्मित अस्त्रों-शस्त्रोंके भंडारकी त्वरित खपतकी तीव्र इच्छा जाग्रत हो गयी है। डेमोक्रेट्सका शासन चल रहा था तो रूस-यूक्रेन युद्धकी दशा-दिशा गम्भीर और घातक नहीं थी। डेमोक्रेट्सको पता था कि उनके संबंधियोंके अस्त्र-शस्त्र धीरे-धीरे युद्धमें खप ही रहे हैं। किन्तु ट्रम्पके सत्तामें आते ही उन्हें लगने लगा कि यदि युद्ध बंद हो गये (जो ट्रम्पके संकल्पके अनुसार बंद ही होने थे) तो उनके अस्त्रों-शस्त्रोंके कारोबारका क्या होगा। इसीलिए उन्होंने ट्रम्प द्वारा युद्ध बंद करानेके संकल्पकी घोषणाके तुरन्त बाद यूक्रेनके अपने ही द्वारा चयनित एवं नियुक्त प्रधान जेलेंस्कीको रूसके प्रति अधिक आक्रामक होनेके लिए दुष्प्रेरित किया। इसके लिए बाइडेनने, ट्रम्पको सत्ता हस्तांतरणसे पहले ही, यूक्रेनको लम्बी दूरीतक मार कर सकनेवाले अत्याधुनिक प्रक्षेपास्त्र दे दिये, जिनका यूक्रेनने रूसपर प्रयोग भी कर दिया है।

जबतक ट्रम्प सत्तारूढ़ नहीं हो जाते, तबतक बाइडेनके नेतृत्वमें अमेरिकी नीतियां पूरे विश्वके लिए चुनौतियां खड़ी करेंगी। इसी संदर्भमें आनेवाले एक-डेढ़ महीने अति महत्वपूर्ण हैं। रूसकी जनसंख्या कम है। अब उत्तर कोरियाके कुछ हजार सैनिक रूसकी ओरसे युद्ध लड़ रहे हैं। यूक्रेनके प्रहारके बदले रूसने भी उसपर अबतकका सबसे बड़ा प्रक्षेपास्त्रीय प्रहार किया, जिससे यूक्रेनके महत्वपूर्ण उद्यमी संपदा क्षेत्रमें बड़ी बर्बादी हुई। रूसी राष्ट्रपति पुतिन द्वारा यूक्रेनपर परमाणु आक्रमणकी चेतावनी देनेके बाद दुनियामें भयंकर असुरक्षाकी स्थितियां उत्पन्न हो चुकी हैं।

अमेरिकाके साथ इंग्लैंडने भी यूक्रेनको नवोन्नत प्रक्षेपास्त्र दिये हैं। अमेरिका और इंग्लैंड द्वारा दिये गये प्रक्षेपास्त्रोंका रूसके विरुद्ध प्रयोग करके यूक्रेनने विश्वको असहज स्थितिमें खड़ा कर दिया है। लगभग पूरा यूरोपीय मंडल देशोंके रूपमें चाहे-अनचाहे ही रूसके विरोधमें खड़ा है। यदि कुछ देश रूसके विरोधी नहीं भी हैं तो भी उन्हें यूरोपीय संघके सदस्योंके रूपमें यूरोपीय संकल्पके अनुसार रूसके विरोधमें एकजुट होना पड़ रहा है। यूक्रेन द्वारा रूसपर किये गये अबतकके सबसे बड़े मिसाइल आक्रमणमें रूसके सोलह-सत्रह सौ सैनिक बलिदान हो गये। प्रतिक्रियामें रूसने भी यूक्रेनके महत्वपूर्ण नगरपर उन मिसाइलोंसे आक्रमण किया है, जिनका उसने अभीतक प्रयोग नहीं किया था। रूसी राष्ट्रपति पुतिनने तो स्पष्ट कर दिया है कि रूसका ये युद्ध अब यूक्रेनके विरुद्ध नहीं, बल्कि अमेरिका, इंग्लैंड, इत्यादि देशोंके विरुद्ध हो चुका है, क्योंकि यही देश हैं जो संयुक्त नाटो सेना और सैन्य आयुध अस्त्रोंको रूसके विरुद्ध इस्तेमाल कर रहे हैं। अब जबतक ट्रम्प सत्तारूढ़ नहीं हो जाते, तबतक जो. बाइडेनके नेतृत्वमें अमेरिकी नीतियां पूरे विश्वके लिए प्रकार-प्रकारकी चुनौतियां खड़ी करेंगी। इसी संदर्भमें आनेवाले एक-डेढ़ महीने अति महत्वपूर्ण हैं।

रूसकी जनसंख्या कम है। उसके पास सैनिकोंका भी अभाव है। इसलिए कुछ दिनतक भारतीय सैनिकोंने भी रूसकी ओरसे युद्धमें भागीदारी की थी, किन्तु अप्रत्याशित कठिनाइयोंके कारण भारतीय सैनिक युद्धसे वापस भारत लौट आये थे। अब उत्तर कोरियाके कुछ हजार सैनिक रूसकी ओरसे युद्ध लड़ रहे हैं। यूक्रेनके प्रहारके बदले रूसने भी उसपर अबतकका सबसे बड़ा प्रक्षेपास्त्रीय प्रहार किया, जिस कारण यूक्रेनके महवत्वूर्ण उद्यमी संपदा क्षेत्रमें बड़ी बर्बादी हुई। ऐसी युद्धक परिस्थितियोंमें रूसके पास रूसी संप्रभुताकी रक्षा करनेके लिए यूक्रेनके आक्रमणके प्रतिकारमें अब परमाणु आयुध द्वारा आक्रमण करनेकी चेतावनी देनेके अतिरिक्त कोई अन्य सुरक्षित उपाय नहीं बचा है। इसीलिए रूसी राष्ट्रपति पुतिन द्वारा यूक्रेनपर परमाणु विस्फोट द्वारा आक्रमण करनेकी चेतावनी देनेके बाद दुनिया सहित रूस एवं यूक्रेनकी सीमाओंके समीपस्थ देशोंमें भयंकर असुरक्षाकी स्थितियां उत्पन्न हो चुकी हैं। दोनों देशोंके पड़ोसी देशोंने अपने-अपने नागरिकोंको दिशा-निर्देश दे दिये हैं कि वे परमाणु विस्फोट होनेकी स्थितिमें जीवनरक्षाके लिए क्या-क्या उपाय करें।

अब जबतक अमेरिकामें ट्रम्प सत्तारूढ़ होकर अमेरिकाका समस्त शासकीय-प्रशासकीय प्रतिनिधित्व नहीं संभाल लेते तबतक दुनियामें पहलेसे चले आ रहे युद्धोंकी दशा-दिशा पहलेसे अधिक भयंकर, मारक और विश्व विनाशक हो सकती है। वैसे आशंका तो यही है कि ट्रम्पकी अयुद्धक नीतियोंका खंडन करनेके लिए स्वयं अमेरिकाका डेमोक्रेट्स वामपंथी समुदाय यूरोपीय देशोंके वामपंथी समुदायोंसे मिलकर हरसंभव यही प्रयास करेगा कि युद्ध बंद न हो। ऐसे समुदायकी मंशा दुनियाको तृतीय विश्व युद्धमें धकेलनेकी भी लगती है। ऐसा इसलिए लग रहा है क्योंकि इस समुदायकी पूंजीगत वृद्धि युद्धक सामग्रियोंके कारोबारपर ही निर्भर है। इन्हें मानवता, जलवायु, पर्यावरणकी और यहांतक कि मानवीय एवं पर्यावरणीय हानिसे ग्रस्त अपने देशोंके साथ भी कोई सहानुभूति नहीं है। ये कटु अराजक, पाषाण क्रूर और घोर अमानवीयतासे ग्रसित हैं।

विश्वके दो भूभागोंपर चल रहे युद्धोंके संदर्भमें एक स्वाभाविक प्रश्न यह भी उत्पन्न होता है कि युद्ध कौन और क्यों चाहता है! वास्तवमें दुनियाका सर्वाधिक शक्तिशाली देश अमेरिकाके भ्रष्ट राजनीतिज्ञ, वामपंथी नेता, क्रूर पूंजीपति और यूरोपीय देशोंमें स्थित इनके अनुसरणकर्ता ही युद्धकी अग्नि भड़काये रखना चाहते हैं, ताकि युद्ध आरंभ होनेसे लेकर दीर्घावधितक इनके चलते रहनेकी सम्पूर्ण प्रक्रियामें इनके विभिन्न व्यावसायिक हित सधते रहें और फलीभूत होते रहें। अब इस कारण दुनियामें प्रकृति एवं जलवायुका विनाश हो, अमानवीयताका प्रसार हो, भुखमरी या गरीबी फैले अथवा अनेक प्रकारकी समस्याएं एवं कठिनाइयां ही क्यों न उत्पन्न हों या होती रहें, इन्हें इनसे कोई सरोकार नहीं है। निवर्तमान होने जा रहे डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति जो. बाइडेनका अपना पुत्र रॉबर्ट हंटर बाइडेन भी ऐसे ही नेता या कहें पूंजीपतिके रूपमें एक व्यक्ति है। इसके यूक्रेन स्थित कई कम्पनियोंकी परियोजनाओंमें व्यापक हित हैं। यूक्रेनकी सबसे बड़ी निजी प्राकृतिक गैस निर्माता कम्पनियोंमेंसे एक किसी अग्रणी कम्पनीके बोर्डसे भी हंटर पहले कभी जुड़ा रहा था। यह कई संदिग्ध कम्पनियोंके प्रचारक तथा विधिक प्रतिनिधिके रूपमें भी कार्य कर चुका है। इन कम्पनियोंमें वे कम्पनियां भी सम्मिलित हैं जिनके अस्त्र-शस्त्र विशाल मात्रामें रूस-यूक्रेन और इसरायल-फिलीस्तीनके युद्धोंमें प्रयोग किये जा रहे हैं। रॉबर्ट हंटरके व्यावसायिक हित फलित होते रहें, रॉबर्टकी कार्यरुचि वाली संदिग्ध कम्पनियोंके कारोबारी लाभ सुरक्षित रहें और इन दोनोंकी सहायक विभिन्न कम्पनियोंका लाभार्जन प्रत्येक नये दिनमें बढ़ता रहे, इसके लिए जो. बाइडेनने अमेरिकी लोकतंत्रका दुरुपयोग किया है। ऐसे स्वार्थी, विनाशक और अराजक नियोजनके लिए उन्होंने अमेरिकी शासन-प्रशासनका अनुचित दोहन किया है। यदि भारतको यह त्रुटिभ्रम है कि बाइडेन प्रशासन भी ट्रम्प प्रशासनकी भांति भारतके लाभ एवं पक्षमें है अथवा था तो ऐसे भ्रमसे मुक्त होनेमें ही भारतीय लोकतंत्रका हित है।

पर्यावरणीय प्रलयको आमंत्रण

कोई बड़ी क्रांति तबतक संभव नहीं है जबतक हम कार्बन उत्सर्जनको कम करनेके लिए अपनी जीवनशैलीमें बदलाव लानेका प्रयास नहीं करते, सरकारोंपर दबाव नहीं डालते और हमारी पृथ्वीको आपदासे बचानेके लिए आन्दोलन शुरू नहीं करते।

❑ **अविजित**

इन दिनों, खुदकी पीठ ठोंकनेके लायक बात है कि यह लेखक कार खरीदनेके प्रलोभनसे बचा हुआ है। वास्तवमें जिस शख्सको पैदल चलना बहुत पसंद हो, उसे यह सोचकर अच्छा लगता है कि इस नैसर्गिक कार्यसे कोई कार्बन उत्सर्जन नहीं होता और वह न्यूनतम ही सही, जलवायु आपातकालके खतरेसे निबटनेमें अपना योगदान कर रहा है। हालांकि पैदल यात्रीको आजकल एक बाधाके रूपमें देखा जाता है। आखिरकार ऐसा लगता है, हमारे राजमार्ग, सड़कें/गलियां सिर्फ कारों, मोटरबाइक और अन्य वाहनोंके लिए ही हैं। कोई आश्चर्य नहीं कि शांतिसे चलना या बिना किसी चिंताके सड़क पार करना लगातार मुश्किल होता जा रहा है। विद्रूपता यह कि यदि आप कार्बन उत्सर्जनको कम करनेमें एक भूमिका निभाना चाहते हैं। भले ही वह कितनी भी न्यूनतम हो तो आपकी जरूरत नहीं है। भले ही वैज्ञानिक और पर्यावरणविद हमें बार-बार याद दिला रहे हैं कि जीवाश्म ईंधन निरन्तर जलनेके कारण दुनिया जलवायु आपातकालकी स्थितिमें पहुंच चुकी है, फिर भी हम पेड़ काटने, मेगा एक्सप्रेसवे बनाने, गति एवं गतिशीलताका महिमामंडन करने, कार खरीदने (अधिकसे अधिक बड़ी) और कस्बों/शहरोंको इस तरहसे डिजाइन करनेसे कभी नहीं थकते कि पैदल चलना या साइकिल चलाना लगभग असंभव हो जाय। दिल्ली सांख्यिकी पुस्तिका २०२३ के आंकड़े भयावह हैं।

राष्ट्रीय राजधानीमें पंजीकृत वाहनोंकी कुल संख्या १.२ करोड़ थी, जिनमेंसे ३३.८ लाख निजी वाहन थे। यह खेल जारी है, भले ही वाहनोंसे निकलनेवाला उत्सर्जन दिल्लीके प्रदूषणका लगभग ३८ प्रतिशत है। यह पूरी तरह आत्मघाती है। उदाहरणके लिए बेंगलुरुके भाग्यकी कल्पना करें, एक शांत शहरका शोरगुलभरे क्षेत्रमें बदल जाना, जो अब अपने कुख्यात ट्रैफिक जामके लिए जाना जाता है। जैसा कि एक रिपोर्ट बताती है, २३ लाखसे अधिक निजी कारोंवाले इस शहरमें वाहनसे महज दस किमीकी दूरी तय करनेमें औसतन ३० मिनट खप जाते हैं! ऐसा लगता है कि हम एक दुष्चक्रमें फंस गये हैं- अधिक कारें, अधिक ट्रैफिक जाम, अधिक फ्लाईओवर, अधिक एक्सप्रेसवे, अधिक प्रदूषण। फिर भी तकनीक-पूंजीपति, ठेकेदार और राजनेता लॉबीने जल्द ही चालू किये जानेवाले एक अन्य एक्सप्रेसवेका महिमामंडन करना शुरू कर दिया है। जी हां, २६४ किलोमीटर लंबा यह दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे आपको इन दोनों शहरोंके बीच सिर्फ २.५ घंटेमें यात्रा करने लायक बनायेगा और हमेशाकी तरह, हम किसी फैंसी कारका नवीनतम मॉडल खरीदकर, इस आकर्षक एक्सप्रेसवेपर ड्राइव करनेको ललचायंगे, जिसका रोमांच अति आधुनिक समयमें धर्म-सा बन गया है। तेज और तेज गति और हम आसानीसे यह भूल रहे हैं कि इस एक्सप्रेसवेको बनानेमें, खुद भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरणके आंकड़ोंके मुताबिक ७,५५५ पेड़ पहले ही गिराये जा चुके हैं! पेड़ोंके दर्द और परिणाममें बननेवाली मानवीय त्रासदियोंकी किसे परवाह। इसी तरह विकासकी आधुनिकतावादी भेड़चालमें निहित गति/गतिशीलताने भारतमें घरेलू हवाई यात्री यातायातमें जबरदस्त वृद्धि की है, २०२४ में हवाई यात्रायोंकी संख्या १५ करोड़ पार करनेकी उम्मीद है। प्रगतिकी इन गाथाओंके बीच, क्या हमने यह सोचने-समझनेकी जहमत उठायी कि परिवहनके साधनोंमें हवाई यात्रा सबसे ज्यादा कार्बन-उत्सर्जन करनेवाली गतिविधि है। ऐसा लगता है कि हम इसकी कीमत चुकानेको तैयार हैं। मेट्रो शहरोंमें हम प्रदूषित सांसें ले रहे हैं, पार्किंगकी जगहको लेकर अपने पड़ोसियोंसे झगड़ते हैं और गति एवं शोरके निरंतर संपर्कमें रहनेके कारण उच्च रक्तचाप और मधुमेहसे पीड़ित हो रहे हैं और मुझे लगता है कि गति और गतिशीलताके प्रति इस आसक्तिका विरोध किया जाना चाहिए जिसका प्रतीक हमारे एक्सप्रेसवे और हवाई अड्डे हैं। यह लेखक धीमेपनकी लयका आनन्द लेता है।

गतिके प्रति हमारे आकर्षणका एक अन्य परिणाम है- उपभोक्तावादी पंथ। एक खरीदो, एक मुफ्त पाओ बाजार द्वारा संचालित यह मंत्र हमें अधिक खरीदने और उपभोग करनेके लिए उकसाता है, चाहे यह नवीनतम इलेक्ट्रानिक सामान हो, कोई फैंसी परिधान, आलू चिप्स या डिटर्जेंट पाउडरका पैकेट या फिर नया स्मार्टफोन। उपभोगवादका यह सामान्यीकरण पर्यावरणको और प्रदूषित करता है। इन उत्पादोंको बनानेके लिए विशालकाय कारखाने और ढुलाई परिवहनके परिचालनके वास्ते भारी मात्रामें ऊर्जाकी आवश्यकता होती है। जिससे कार्बन उत्सर्जन बढ़ता है। इसी तरह कपड़ा उत्पादनमें हर साल लाखों टन गूदड़का कचरा पैदा होता है और बहुत कम कपड़े ही रिसाइकिल हो पाते हैं। इसके अलावा जैसे-जैसे ई-कॉमर्सने पैक किये सामानोंपर हमारी निर्भरता बढ़ायी है, प्लास्टिकमें लिपटे लाखों पैकेज भारी मात्रामें कचरा पैदा करते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि प्लास्टिक जीवित प्राणियोंको हानिकारक रसायनोंके संपर्कमें लाता है जो कैंसर और अन्य स्वास्थ्य समस्याओंका कारण बन सकते हैं। इसी प्रकार इलेक्ट्रॉनिक्स गैजेट्समें दुर्लभ धातुएं होती हैं जो अक्सर लैंडफिलमें निबटायी जाती हैं। इसके अलावा प्लास्टिकका कचरा समुद्रमें पहुंचकर समुद्री जीव प्रजातियोंको गम्भीर नुकसान पहुंचा रहा है।

फिर भी पूंजीवादका सिद्धांत हमें अधिक खरीदने और अधिक उपभोग करने और इस तरह पृथ्वीके पारिस्थितिकी तंत्रको नुकसान पहुंचानेके लिए उकसाता रहता है। जब आप किसी शॉपिंग मॉलमें जाते हैं तो विशेष ऑफर और छूटके संदेश प्राप्त होते हैं और खरीदारी एवं खरीदको सामूहिक मनोरंजनका रूप दे दिया जाता है, तब आपको अहसास होता है कि उपभोक्तावाद हमारे वक्तका सबसे प्रिय धर्म है। फिर भी यह लेखक एक न्यूनतमवादी बने रहना चाहता है। उसे पता है कि उसका धीमा जीवन या न्यूनतमवाद हमारे आस-पास जो कुछ भी हो रहा है उसका कोई उत्तर नहीं है। जलवायु आपातकालकी साक्षात दिखाई दे रही उपस्थिति और उसके तमाम विनाशकारी परिणाम- ग्रीनहाउस गैसोंके निरंतर उत्सर्जनसे औसत वैश्विक तापमानमें १.१-१.२ डिग्री सेल्सियसकी वृद्धि, ग्लेशियरोंका पिघलना, तीव्रसे तीव्रतर होती गर्मी, बार-बार आनेवाली भयावह बाढ़ें, चक्रवात, जंगलोंकी आग और मानव जीवनकी हानि। हमें एक बड़े पैमानेपर संरचनात्मक परिवर्तनके लिए प्रयास करनेकी आवश्यकता है जिसके लिए विश्वके नेताओं, नीति-निर्माताओं एवं कारपोरेट अभिजात्य वर्गको ऐतिहासिक पेरिस समझौतेको गम्भीरतासे लेना होगा और वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जनमें सतत कमी लानेके लिए विकास और आर्थिक संवृद्धिकी नीतियोंपर पुनर्विचार करना होगा। लेकिन फिर, कोई बड़ी क्रांति तबतक संभव नहीं है जबतक हम-आप और मैं-कार्बन उत्सर्जनको कम करनेके लिए अपनी जीवनशैलीमें बदलाव लानेका प्रयास नहीं करते, सरकारोंपर दबाव नहीं डालते और हमारी पृथ्वीको आपदासे बचानेके लिए आन्दोलन शुरू नहीं करते।

कर्म और उपासना

❑ **धर्मेश कुशवाहा**

प्राणी प्रकृति द्वारा निर्मित होनेके कारण अपने जीवन यात्रामें कर्म करता रहता है। प्राणी कभी पूजा-पाठ, कभी उपासना और कभी दोनों कार्य प्रणाली अपनाता है। परमतत्व सर्वज्ञ है इसी कारण यथाभूत कर्म, फल और साधनके अनुसार अर्थों कर्तव्य पदार्थोंका तथ्यात्मक विधान किया है अर्थात् यथायोग्य रीतिसे उनका विभाग किया है और संवत्सर नामक प्रजापतियोंको उनकी योग्यता अनुसार पृथक-पृथक दायित्व दिया है। इस लोकमें अग्निहोत्रादि कर्म करते हुए ही जो पूरी आयु जीने की इच्छा रखता है तो उसे शास्त्रविहित कर्म करते हुए जीना चाहिए। ज्ञान और कर्मका विरोध पर्वतके समान अविचल होता है। ज्ञान मार्ग और कर्ममार्ग सृष्टिके आरम्भसे परम्परागत है। इनमें पहले कर्म मार्ग है और बादमें निवृत्तिमार्ग है। जिनमें कर्म फलोंका भोगकी इच्छा होता है वे अज्ञानसे आच्छादित है। वे इस शरीरको छोड़कर अपने कर्म और ज्ञानके अनुसार स्थावर पर्यन्त योनियोंमें ही जाते है। उपनिषदमें कर्मको अज्ञानी और सकाम प्राणीके लिए उद्धृत है, क्योंकि जो प्राणी परमतत्वमें ही रहना चाहता है उसके लिए ज्ञाननिष्ठा कही गयी है और सकाम हेतु प्राणीके लिए कर्म निष्ठा कही गयी है। सकाम कर्ममें अज्ञानी ही लगे रहते है। कर्मको उपनिषदमें अविद्याकी श्रेणीमें कहते है तथा उपासनाको विद्या माना जाता है। कर्म विद्या अर्थात् अग्निहोत्र आदि रूपसे केवल पितृलोक मिलता है। विद्या (उपासना) से देवलोककी प्राप्ति होती है। ऐसी श्रुतियोंके अनुसार वेदवेत्ता लोग कहते हैं। यह उनका परम्परागत आगम है। केवल कर्म करनेसे या केवल उपासना करनेसे प्राणीको आत्मज्ञानकी प्राप्ति होनेमें संशय होता है। ईशावाश्स्योपनिषदके मंत्र ग्यारह में उद्धृत है।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभ्य सह ।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वाऽमृतमश्नुते ॥

जो विद्या (उपासना) और अविद्या (कर्म) दोनोंको एक साथ जानता है वह अविद्यासे मृत्युको पार करके विद्यासे अमरत्व प्राप्त कर लेता है। विद्या और अविद्या अर्थात् देवताज्ञान और कर्म इन दोनोंको जो एक साथ अनुष्ठान किये योग्य जानता है, इस प्रकार समुच्चय करनेवालेको ही पुरुषार्थका संबंध क्रमश: होता है। अविद्या अर्थात् अग्निहोत्र आदि कर्मसे मृत्यु शब्द वाच्य स्वाभाविक (व्यावहारिक) कर्म और ज्ञान इन दोनोंको पार करके विद्या (देवताज्ञान) से अमृत इससे देवात्मभावको प्राप्त हो जाता है। देवत्वभावकी जो प्राप्त होना है वही अमृत कहा जाता है। जो ज्ञाननिष्ठ संन्यासी हैं उन्हें ही असुर्या नाम ते लोका: इत्यादि मंत्रोंसे अज्ञानीकी निन्दा करते हुए आत्माके यथार्थ स्वरूपका उपदेश किया है। आत्मनिष्ठामें उन्हींका अधिकार है, सकाम प्राणीका नहीं। इसी प्रकार श्वेताश्वर मंत्रोपनिषदमें भी परम पवित्र आत्मज्ञानका आश्रमवालोंको ही उपदेश किया है जिससे साधकको कर्म और उपासनाका यथार्थ बोध प्राप्त होता है।

महिला मतदाताओंकी मुखरतासे बदली नतीजोंकी तस्वीर

❑ **डा. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा**

महाराष्ट्र विधानसभाके चुनावोंने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया है कि दुनियाके सबसे बड़े लोकतंत्रमें चुनावी नतीजोंको बदलनेमें महिलाओंकी प्रमुख भूमिका हो गयी है। महाराष्ट्र विधानसभाके चुनावोंमें महिलाओंके छह प्रतिशत अधिक मतदानने चुनावी परिणामोंको ही पूरी तरहसे बदल कर रख दिया है। इसी सालकी शुरुआतमें हुए लोकसभाके चुनाव परिणामोंसे महाराष्ट्रमें कांग्रेस नीत महाअघाड़ी गठबंधन अतिउत्साहमें था और लगभग यह मानकर ही चल रहे थे कि महाराष्ट्रके चुनाव नतीजे उनके पक्षमें ही होंगे। अत्यधिक आत्मविश्वासके चलते चुनावी अभियानको सही दिशा एवं समझ नहीं बैठा पाये और इसका परिणाम यह रहा कि भाजपा नीत गठबंधनने विजयके सारे रेकार्ड तोड़ दिये। माने या न मानेपर इसमें कोई दो राय नहीं कि चुनावी नतीजोंको